Dr M.K.Jha.
Dept of Sociology.
V.S.J college, Rajnagar.

B.A. Part-II, Sociology Hons,
Paper-III
Indian Society.

Question- भारतीय संदर्भ में जनजाति की अवधारणा तथा इसकी प्रमुख विशेषताओं की विवेचना कीजिए।

Ans- भारत एक विशाल देश है जिसमें अनेक विविधताएं हैं। यहां अनेक धर्म, मत, सम्प्रदाय, प्रजाति, जाति एवं जनजातियों के लोग निवास करते हैं जिसमें आदिम स्तर पर जनजातिय समाज है जो जंगल, पहाड़ या पहाड़ी क्षेत्रों में निवास करते हैं। प्रत्येक सभ्यता के क्षेत्र में अत्यधिक पिछड़े हुए हैं फलत इन्हें वन्यजाति, आदिवासी एवं जनजाति आदि नाम से सम्बोधित किया जाता है। भारतीय संविधान में इन लोगों को अनुसूचित जनजातियाँ (Scheduled Tribe) कहा गया है। सन् 2001 की जनगणना के अनुसार भारत में इस समय अनुसूचित जनजातियों की जनसंख्या 8.90 करोड़ पाया गया है जो झारखण्ड, महाराष्ट्र, उड़ीसा तथा राजस्थान के क्षेत्र में पाए गये हैं भारत में सबसे अधिक अनुसूचित जनजातियों छत्तीसगढ़ में पाए गये हैं।

जनजाति वह क्षेत्रीय मानव समूह है जो भू-भाग, भाषा, सामाजिक नियम और आर्थिक कार्य आदि विषयों में एक सामान्यता के सूत्र में बंधा रहता है। D.N. Majumdar ने जनजातियों के सम्बन्ध में लिखे हैं कि जनजाति परिवारों का ऐसा समूह है जिसका एक सामान्य नाम होता है, जिसके सदस्य एक निश्चित क्षेत्र में निवास करते हैं एक सामान्य भाषा बोलते हैं तथा विवाह और व्यवसाय के विषय में कुछ निषेध नियमों का पालन करते हैं।

Gillin and Gillin लिखते हैं कि स्थानीय आदिम समूहों के किसी भी संग्रह को जो कि एक सामान्य क्षेत्र में रहता है एक सामान्य भाषा बोलता है और जो एक सामान्य संस्कृति का अनुसरण करता है वह जनजाति कहलाते हैं। डॉ घुरिये, चार्ल्स विनिक और हॉबल जैसे मानवशास्त्री जनजातियों की परिभाषा मिलता-जुलता प्रस्तुत किए हैं।

Ajanta
Scanned with CamScanner

अध्ययन कहा जा सकता है कि एक जनजाति एक ऐसा मानव समूह है जिनकी एक सामान्य संस्कृति, भाषा, राजनीतिक संगठन एवं व्यवसाय होता है तथा जो सामान्यतः अन्तर्विवाह के नियमों का पालन करता है।

भारत में जनजातिय समुदाय के निम्न विशेषताएँ मान्य है –

(1) सामान्य भू-भाग (common Territory)
जनजाति एक क्षेत्रीय समुदाय है। प्रत्येक जनजाति एक निश्चित-भू-भाग में निवास करती है। साधारणतया इनके निवास का क्षेत्र कोई जंगली, पहाड़ी अथवा सीमान्त प्रदेश होता है इनके फलस्वरूप जनजातीय समुदाय का निवास कुछ अलग-थलग होता है।

(2) सामान्य भाषा – (Common Language)
प्रत्येक जनजाति की एक पृथक भाषा होती है एक जनजाति के सभी सदस्य अपनी भाषा का ही उपयोग करते है। भाषा की यह सामान्यता संस्कृति को प्रभावित करता है।

(3) बड़ा भौगोलिक क्षेत्र –
भारत में अनेक जनजातियाँ ऐसा भी है जिनके सदस्यों की संख्या लाखों में है। संथाल, गोंड, और भील आदि ऐसी जन-जातियाँ है जिनकी कुल जनसंख्या आज लगभग एक करोड़ से भी अधिक है। यह जनजातियाँ बहुत बड़े भौगोलिक क्षेत्रों में फैली हुई है।

(4) आत्मनिर्भर समुदाय – (Self sufficiency)
एक जनजाति के सभी सदस्य आर्थिक आवश्यकता की पूर्ति स्वयं करने में सक्षम हैं। शिकार, फल-फूल, पशुचारण, कृषि कार्य और गृह उद्योग में संलग्न होकर, आर्थिक उपार्जन और आवश्यकता की पूर्ति करते है जो आत्मनिर्भरता का प्रतीक है।

5. अन्तर्विवाह – (Endogamy)
प्रत्येक जनजाति एक अन्तर्विवाही समुदाय के रूप में संगठित है। किसी भी व्यक्ति को अपनी जनजाति से बाहर विवाह सम्बन्ध स्थापित करने की अनुमति नहीं दी जाती है।

6. एक नाम – A Name
प्रत्येक जनजाति का नाम अवश्य होता है जो पहचान और परिचय का आधार होता है।

7. सामान्य संस्कृति – 'common culture'
प्रत्येक जनजाति की अपनी एक सामान्य संस्कृति होती है। इस संस्कृति में व्यवहार सामान्य नियम होते हैं जैसे उनके रीति-रिवाज, प्रथाए, लोकाचार, कला, धर्म, जादू-संगीत, विश्वासों एवं मूल्यों आदि उल्लेखनीय है।

8. राजनीतिक संगठन – (Political organization)
एक जनजाति का अपना निजी राजनीतिक संगठन होता है। इसमें अधिकांशतः एक वंशानुगत मुखिया होता है जो परम्पराओं का पालन करवाने, नियंत्रण बनाये रखने एवं नियमों का उल्लंघन करने वालों को दंड देने की व्यवस्था करता है। जनजातियों में एक council of the elders भी पाए जाते है।

9. सामान्य निषेध – 'Common Taboo'
प्रत्येक जनजाति समुदाय के सदस्य खान-पान, विवाह, परिवार, व्यवसाय, धर्म आदि में सम्बन्धित समान निषेधों का पालन करते हैं।

उपर्युक्त मुख्य विशेषताओं के अतिरिक्त सामूहिक जीवन - आत्माओं की पूजा, पिछड़ा हुआ जीवन तथा प्रथागत कानून आदि उल्लेखनीय विशेषताएं भी है।

Scanned with CamScanner